'देश की उन्नति का मार्ग है, राष्ट्र प्रेम और सेवा की भावना'

किसी राष्ट्र की उन्नति वहां रहने वाले लोगों की सोच और भावना से निर्धारित होती है। राष्ट्र की उन्नति के लिए वहां के लोगों की सोच, कार्य व्यवहार, समर्पण, त्याग, परिश्रम, स्वास्थ्य, शिक्षा, विज्ञान और खुशहाली से तय होता है। देश किसी एक व्यक्ति या जाति का नहीं होता, बल्कि वहां रहने वाले संपूर्ण लोगों का होता है, जो अपने राष्ट्र की प्रगति में अपना योगदान देते हैं। किसी राष्ट्र की शक्ति वहां की युवा शक्ति एवं अनुभवी लोग होते हैं, जिनके द्वारा नीतियां बनाई जाकर देश को आगे ले जाने में योगदान देते हैं।

राष्ट्र प्रेम की भावना आखिर कैसे व्यक्ति के जीवन को सकारात्मक रूप से बदल सकती है, इसी बात को यहां पर बताया जा रहा है। जिस तरह से हमें अपना परिवार प्यारा होता है, उसी प्रकार से हमारी भावना अपने देश के प्रति भी होनी चाहिये। जब कोई अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित कर उसे पाने के लिए हरसंभव प्रयास करता है तो यदि वह अपने लक्ष्य के साथ राष्ट्र-प्रेम की भावना को जोड़ देता है, तो उसके लिए वह लक्ष्य महान हो जाता है। राष्ट्र के प्रति सच्चा प्रेम, समर्पण और त्याग की भावना, लोगों की भलाई और उन्नति के लिए की सोच रखना, हमें अधिक सृजनशील और जिम्मेदार व्यक्ति बनाता है। अपने निजी स्वार्थ के लिए तो हर कोई सोचता है, लेकिन जब यह स्वार्थ लोकहित की भावना से जुड़ जाता है, तब वह कल्याणकारी हो जाता है।

राष्ट्र प्रेम तब सार्थक हो जाता है जब, हर देशवासी राष्ट्र के प्रति जागरूक रहे। अपने हर छोटे-बड़े काम को देश-सेवा से जोड़कर रखे। हर परिवार, समाज और जाति के लोग एक-दूसरे का आदर और सम्मान रखते हुए एक-दूसरे के प्रति स्वीकार्यता का भाव रखे। यह सोच तभी विकसित हो सकेगी जब हम लोग अपने अहंकार, स्वार्थ और लालच से ऊपर उठकर सोच सोचेंगे। राष्ट्र प्रेम की भावना को जगाने और विकसित करने के लिए हमें अपने देश की संस्कृति, इतिहास और भौगोलिकता का अध्ययन करना चाहिये।

हम अपने परिवार में, समाज में अपना योगदान कैसे दे सकते हैं? हम अपने छोटे-छोटे कामों को कैसे अच्छे ढंग से करें? हम अपना कार्य, व्यवहार और आचरण कैसे रखें? इत्यादी बातों को ध्यान में रखकर एक अच्छी समझ के साथ जब हम कोई काम करते हैं तो वह देश की उन्नति में योगदान देता है। धैर्यपूर्वक, कड़ी मेहनत के साथ हम अपने लक्ष्य को देश की उन्नति के साथ जोड़ते हैं तो इससे हमारे परिश्रम की गुणवत्ता बेहतर होती जाती है और यही अनुभव देश की अर्थव्यवस्था और लोगों के काम आती है। माना कि हमारे काम में कई प्रकार की बाधाएं आती हैं, लेकिन देश भक्ति की भावना रखते हुए उन परेशानियों से पार होने में सक्षम हो जाते हैं। समस्यारूपी अंधकार को प्रकाशरूपी सकारात्मक सोच के साथ हल करने का भाव हमारे भीतर होना चाहिये। हमारे द्वारा लिये गये आज के निर्णय हमारे भविष्य का निर्माण करेंगे।

आज हम किस स्थिति में हैं? आज हमारी क्या सोच क्या है? हमारा आदर्श कौन है? क्या हमारा मन शांत और नियंत्रित है? क्या हमारे जीवन के लक्ष्य स्पष्ट हैं? हम अपनी कर्मेन्दियों और ज्ञानेन्द्रियों से किस तरह काम ले रहे हैं? क्या हम अपने काम को पूर्ण मनोयोग और उत्साहपूर्वक कर रहे हैं? इत्यादी चीजें हमारे जीवन की परिस्थितियों और भविष्य का निर्माण करेंगी। हम चाहे कोई भी काम कर रहे हों, उसके पीछे की भावना बड़ी होनी चाहिये। जैसे कोई किसान है तो उसे यह सोच रखनी चाहिये कि मैं अन्न उगाकर देश सेवा कर रहा हूं, कोई नौकरीपेशा है तो उसकी सोच यह होनी चाहिये कि वह जो काम कर रहा है, इससे आम लोगों का भला हो रहा है, लोगों के कष्ट दूर हो रहे हैं। फिर चाहे छोटे-से-छोटा काम करने वाले व्यक्ति को भी अपने भीतर आत्म गौरव होना चाहिये कि उसके काम से लोगों का और देश का विकास हो रहा है। यह भावना हमें राष्ट्र प्रेम और सेवा से जोड़ती है।

माखनलाल यादव खरगोन (मध्यप्रदेश)

कूड़े में खिलते कमल

मेरे सामने बिखरा हुआ बचपन खेल रहा है - जीवंत, खिलखिलाता, पर मलीन बचपन।

मैं पीपल के पेड़ के नीचे बैठी आँटो का इंतज़ार कर रही थी। सामने कुछ नई बनी झुग्गी झोपड़ियाँ थीं। शायद ये लोग कुछ दिन पहले ही आए थे। उन्हीं झोपड़ियों से सटा हुआ सोसाइटियों के कूड़े का एक बड़ा ढेर था। म्युनिसिपैलिटी वाले यहीं से कूड़ा उठाकर ले जाते थे।

हमारे लिए जो कूड़ा था, उन बच्चों के लिए उत्सुकता थी। कुछ नया पाने की लालसा थी। उस कूड़े के ढेर में अपने कमल से नाजुक हाथों से न जाने क्या क्या खोज लाते थे ये। और वो आँखें जिनमें हज़ारों सपने भरे पड़े हैं। आज इस कूड़े के ढेर में मोती की तलाश कर रही हैं।

कूड़े के ढेर में खेलते बचपन को देखकर मैं ठिठक गई। हम चाँद तारों पर पहुँच गए हैं। धरती से दूर उन चाँद तारों की खोज कर रहे हैं। उन्हें पाना चाहते हैं। उन तक जाना चाहते हैं। पर हमारी धरती के ये नन्हे तारे किसी को नज़र नहीं आते।

तभी वहाँ एक बड़ी सी गाड़ी आकर रुकी। उसमें से चार संभ्रांत महिलाएँ निकलीं। आँखों पर काला चश्मा और बांडेड कपड़ों से सजी हुई। ड्राइवर ने गाड़ी का पिछला हिस्सा खोला। उसमें खाने के कुछ पैकेट थे। सभी बच्चे भागकर गाड़ी के पास आ गए।

अब वो महिलाएँ थोड़ी असहज हो गईं। एक ने ड्राइवर को आदेश दिया कि इन्हें कहो थोड़ा दूर हो जाएँ और लाइन बना लें। पर बच्चे तो गाड़ी को भी छूना चाहते थे और उन महिलाओं को भी। तो एक महिला ने उन्हें डाँट दिया कि दूर रहो गाड़ी से।

फिर ड्राइवर ने सभी बच्चों को खाने के पैकेट दिए। अब उन महिलाओं ने बच्चों को अपने से थोड़ी दूरी बनाकर खड़ा किया। दो तीन फ़ोटो लिए। मुँह पर रुमाल रखकर गाड़ी में बैठकर निकल गईं।

अब मेरी बारी थी सोचने की। क्या सचमुच इन्हें सिर्फ खाने की ज़रूरत है? ये आते कहाँ से हैं? क्यों हर साल दर साल ये झुकी झोपड़ी खत्म नहीं होती? इनके माता पिता क्या करते हैं? अगर इनका बचपन वो नहीं दे सकते तो इनको धरती पर क्यों लाते हैं?

क्या ये बच्चे इसी तरह हाथ फैलाए सड़कों पर घूमते दिखेंगे आने वाले समय में भी?

हम इतने समृद्ध, इतने आगे निकल गए हैं, चाँद पर घर बनाने की बात करते हैं, पर फिर भी इन बच्चों को इनका बचपन नहीं लौटा सकते?

वो फ़ोटो सोशल मीडिया पर वाहवाही बटोर लेगी। चार लाइक मिल जाएँगे। पर वो बच्चा? वो कल फिर उसी कूड़े के ढेर में अपना मोती ढूँढेगा। क्योंकि हमने उसे खाना दिया, इंसानियत नहीं। हमने फ़ोटो खिंचवाई, भविष्य नहीं।

कूड़े का ढेर साफ़ हो जाएगा एक दिन। पर क्या इन आँखों में भरा कूड़ा कोई साफ़ करेगा?

चाँद पर जाने से पहले, जमीन पर पड़े इन तारों को उठा लो। वरना एक दिन ये तारे टूटकर हम सब पर गिरेंगे। और तब बहुत देर हो चुकी होगी।

दीपा शर्मा उजाला फरीदाबाद

मासिक धर्म स्वास्थ्य और प्रजनन क्षमता का प्रतीक हैं, ना की शर्मिंदगी का विषय

माहवारी स्वच्छता दिवस पर जागरूकता कार्यशाला का हुआ योजन

बूंदी। जिला प्रशासन और महिला अधिकारिता विभाग ने उमंग संस्थान के सहयोग से माहवारी स्वच्छता शिक्षा सम्मान एवं जागरूकता की पहल विषय पर कार्यशाला का आयोजन शिक्षाविद तेजकंवर के मुख्यातिथ्य एवं उमंग संस्थान की अध्यक्ष डॉ. सविता लौरी की अध्यक्षता में किया गया। कार्यशाला में मुख्य वक्ता के रूप मे महिला अधिकारिता विभाग के सहायक निदेशक भेरूप्रकाश नागर, सामाजिक कार्यकर्ता डॉ. अनुकृति विजय तथा सीनियर रेजीडेंट डॉ. सरोज मीना भी मंचासिन रही।

कार्यशाला को संबोधित करते हुए शिक्षाविद तेजकंवर ने कहा कि मासिक धर्म स्वास्थ्य और प्रजनन क्षमता का प्रतीक हैं, नाकि किसी शर्मिंदगी का विषय हैं। इन्होंने महिलाओं और किशोरियों के बीच मासिक धर्म स्वास्थ्य, स्वच्छता प्रबंधन को बढ़ावा देना और इससे जुड़े सामाजिक कलंक व वर्जनाओं को समाप्त करने की दिशा में माहवारी स्वच्छता सम्मान और जागरूकता की पहल की आवश्यकता पर जोर दिया। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ. सविता लौरी ने स्वच्छता के महत्व को बढ़ावा देना और समाज वर्जनाओं को तोड़ने की बात कही।

सुरक्षित और स्वस्थ आदतों के प्रति हो शिक्षित

कार्यशाला के प्रथम सत्र में डॉ. अनुकृति विजय ने मासिक धर्म के दौरान सुरक्षित और स्वस्थ आदतों के

प्रति शिक्षित कर सामाजिक वर्जनाओं को दूर करते हुए संक्रमण से बचाव की जानकारी दी। इस दौरान सीनियर रेजीडेंट डॉ. सरोज मीना ने किशोरियों को माहवारी के शुरुआती बदलावों और स्वच्छता के बारे में जानकारी देते हुए सुरक्षित स्वछता प्रबंधन, संतुलित आहार, गंभीर संक्रमण से विभिन्न विषयों के प्रति जागरूक किया। सीनियर रेजीडेंट डॉ. सरोज मीना ने संवाद सत्र में प्रतिभागियों के विभिन्न प्रश्नों का समाधान भी किया।

विभागीय योजनाओं की दी जानकारी, जल संरक्षण की दिलाई शपथ

कार्यशाला के द्वितीय सत्र को संबोधित करते हुए सहायक निदेशक भेरू प्रकाश नागर ने मासिक धर्म को केवल स्वच्छता तक सीमित न रखकर महिलाओं के स्वास्थ्य, सम्मान और बुनियादी मानवाधिकार से जोड़कर देखे जाने की आवश्यकता जताई। इससे पूर्व पर्यवेक्षक प्रमिला तथा विधिक परामर्शदाता विनिता अग्रवाल ने विभागीय योजनाओं की जानकारी प्रदान की। सखी वन स्टॉप सेंटर की प्रबंधक हीना शर्मा ने शाब्दिक स्वागत करते हुए आयोजन की जानकारी दी।

कार्यशाला के दौरान उमंग संस्थान के उपाध्यक्ष लोकेश जैन ने वंदे गंगा जल संरक्षण जनअभियान के तहत जल संरक्षण एवं जागरुकता की शपथ दिलवाते हुए वर्तमान में जल संरक्षण की महत्ता पर प्रकाश डाला। उमंग संस्थान के समन्वयक कृष्ण कांत राठौर ने तेज गर्मियों में बेजुबान पक्षियों के संरक्षण और दाने पानी की व्यवस्था करने की अपील की और परिंडों का वितरण किया।

कार्यशाला का संचालन नमिता जिंदल ने किया तथा आभार वरिष्ठ सहायक रविराज मिश्रण ने जताया। इस अवसर पर राकेश माहेश्वरी, नवनीत राठौर, गणेश कंवर, ज्योत्सना खत्री, सुलक्षणा शर्मा, बिंदु शर्मा, दीपा चौहान, हेमा सैनी, जया जैन, शमां भार्गव, अनीता धाबाई, राशि श्रृंगी, पूर्णिमा गौतम, अक्षिता चारण, निशा सालीवाल, शिब्बू जैन, मोना प्रजापत, प्रिंसी मेवाडा, सलोनी शर्मा, टीना वर्मा, पायल जैन, आकृति, युक्ति, अयुधी आदी मौजूद रहे।

एक था शायर

एक युग का अंत: आम आदमी के सुख दुख को मखमली लफ़्ज़ों में पिरोने वाले मशहूर शायर बशीर बद्र नहीं रहे।

उर्दू अदब (साहित्य) के फलक से आज एक ऐसा चमकता हुआ सितारा टूट गया, जिसने आधी सदी से भी ज़्यादा वक़्त तक अपनी रूमानी और आवामी शायरी से करोड़ों दिलों पर राज किया। पद्मश्री डॉ. बशीर बद्र का दुनिया से रुखसत होना सिर्फ एक जिस्म का जाना नहीं है, बल्कि उर्दू ग़ज़ल के उस सुनहरे दौर का अवसान है जिसने शायरी को भारी-भरकम और क्लिष्ट शब्दों के चंगुल से छुड़ाकर आम इंसान की बोलचाल की भाषा बनाया।

बशीर बद्र साहब अक्सर कहा करते थे–

'जी बहुत चाहता है सच बोलें, क्या करें हौसला नहीं होता।'

आज जब वे हमारे बीच नहीं हैं, तो सच बोलने का हौसला और टूट गया है। लेकिन उनकी गज़लें, उनके शेर और उनकी मखमली आवाज़ की गूंज हमेशा हमारे दिलों में ज़िंदा रहेगी।

15 फरवरी 1935 को जन्मी इस महान शख्सियत का असल नाम सैयद मोहम्मद बशीर था। उन्होंने अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी (रू) से बी.ए., एम.ए. और फिर पी.एच.डी. की डिग्री हासिल की। बाद में उन्होंने मेरठ कॉलेज में लंबे समय तक उर्दू विभाग के अध्यक्ष के रूप में अपनी सेवाएं दीं। बशीर बद्र की सबसे बड़ी खूबी यह थी कि उन्होंने गज़ल को मीर और ग़ालिब की रिवायत से आगे बढ़ाकर 'समकालीन समय का आईना' बना दिया। उन्होंने शायरी में उन शब्दों का इस्तेमाल किया जिन्हें एक आम रिक्शावाला, एक दफ्तर जाने वाला बाबू या एक कॉलेज का छात्र आसानी से समझ सके। बशीर साहब ने उर्दू अदब को 'इक्वाई', 'इमेज', 'आमद', 'आहट', 'आस' और 'उजाले अपनी यादों के' जैसी कई शाहकार गज़ल कृतियाँ दीं। साहित्य में उनके अतुलनीय योगदान के लिए उन्हें पद्मश्री (1999) और साहित्य अकादमी पुरस्कार जैसे देश के सर्वोच्च सम्मानों से नवाजा गया।

बशीर बद्र की शायरी में जहां एक तरफ बेपनाह मोहब्बत और रुमानियत थी, वहीं दूसरी तरफ ज़िंदगी का गहरा फलसफा और सियासत पर करारी चोट भी थी। उनके कुछ ऐसे शेर हैं जो भारतीय जनमानस की ज़ुबान पर मुहावरे की तरह चढ़े हुए हैं। जब भी मोहब्बत और बिछड़ने की बात होगी, बशीर साहब का यह शेर सबसे पहले याद आएगा:

'उजाले अपनी यादों के हमारे साथ रहने दो,
न जाने किस गली में ज़िन्दगी की शाम हो जाए।'

और मोहब्बत का यह संजीदा रूप देखिए: 'कोई हाथ भी न मिलाएगा जो गले मिलोगे तपाक से,
ये नए मिज़ाज का शहर है ज़रा फ़ासले से मिला करो।'

साल 1987 के मेरठ दंगों में बशीर बद्र साहब का घर जला दिया गया था। उनकी सालों की पूंजी, उनकी डिग्रियां, उनकी गज़लों की डायरियां सब राख हो गईं। इस दर्द को उन्होंने नफरत में नहीं बदला, बल्कि एक ऐसा शेर लिखा जो आज भी कौमी एकता का सबसे बड़ा दस्तावेज़ है:

'लोग टूट जाते हैं एक घर बनाने में,
तुम तरस नहीं खाते बस्तियां जलाने में।'

मुश्किलों से लड़ते हुए इंसान को हौसला देने में उनकी शायरी का कोई सानी नहीं था:

'यूं ही नहीं रोता कोई शिद्दत-ए-ग़म में,
कुछ ठेस तो लागी होगी दिल में।'

और यह मशहूर शेर जो हर उस शख्स की हिम्मत बढ़ाता है जो ज़ीरो से शुरुआत करता है:

'शोहरत की धूप धूप है, परछाइयां नहीं,
इस धूप को समेट के साया बनाएँगे।'

एक दौर ऐसा था जब देश-विदेश के मुशायरों की कामयाबी की गारंटी सिर्फ एक नाम हुआ करता था–बशीर बद्र। उनके मंच पर आते ही तालियों की गड़गड़ाहट थमने का नाम नहीं लेती थी। उनका शेर पढ़ने का अंदाज़, उनकी आवाज़ का उतार-चढ़ाव और महफ़िल को बांधने की कला अद्भुत थी। वे केवल शायर नहीं थे, वे शब्दों के जादूगर थे जो अपनी शायरी से हंसा भी सकते थे और पल भर में आंखों में आंसू भी ला सकते थे।ज़िंदगी के आखिरी पड़ाव में बशीर बद्र साहब भूलने की बीमारी से पीड़ित हो गए थे। विडंबना देखिए, जिस शायर ने दुनिया को यादों के उजाले बांटे, आखिरी वक्त में उसकी अपनी यादें धुंधली हो गईं। वे अपनी ही गज़लें भूलने लगे थे। लेकिन देश और दुनिया के लाखों कद्रदानों को उनकी एक-एक गज़ल ज़ुबानी याद है।

आज बशीर बद्र साहब हमारे बीच शारीरिक रूप से मौजूद नहीं हैं, लेकिन जब भी कहीं मोहब्बत का ज़िक्र होगा, जब भी कोई अपनी यादों के झरोखे खोलेगा, जब भी कोई बस्तियां जलाने वालों से सवाल करेगा, बशीर बद्र अपने शेरों के ज़रिए वहीं खड़े नज़र आएंगे। उर्दू अदब के इस अजीम शायर को भावभीनी श्रद्धांजलि!

'दुश्मनी जम कर करो लेकिन ये गुंजाइश रहे,
जब कभी हम दोस्त हो जाएं तो शर्मिंदा न हों।'

शैल हिंदी

आनंद संचारिका भेंट कर साझा किए मानवीय मूल्यों के संदेश

आष्टा। राज्य आनंद संस्थान मध्य प्रदेश भोपाल के अंतर्गत संचालित आनंद विभाग की गतिविधियों को जन-जन तक पहुँचाने एवं विद्यालयों में मानवीय मूल्यों के संवर्धन हेतु सांदीपनि विद्यालय आष्टा में विशेष भेंट कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर विद्यालय के प्राचार्य मोहम्मद सितवत खान को आनंद संचारिका भेंट की गई।कार्यक्रम में शिक्षक सतीश वर्मा, शिक्षक ज्ञान सिंह मेवाड़ा, आनंद विभाग के आनंद सहयोगी महेंद्र तोमर एवं जिला संपर्क व्यक्ति डॉ. मंगलेश जायसवाल विशेष रूप से उपस्थित रहेआनंद संचारीका UHV अर्थात सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों से जुड़ी गतिविधियाँ, फीडबैक, विभिन्न स्थानों पर आयोजित कार्यशालाओं की जानकारी, पुष्प मूल्य प्रेरणा तथा मानव गुणों के विकास से संबंधित अनेक प्रेरणादायी सामग्री सम्मिलित रहती है। इसके माध्यम से विद्यार्थियों एवं शिक्षकों में संवेदनशीलता, सहयोग, प्रेम, करुणा, सकारात्मकता एवं मानवीय मूल्यों के विकास का संदेश दिया जाता है।इस अवसर पर प्राचार्य मोहम्मद सितवत खान ने कहा कि वर्तमान समय में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए केवल शैक्षणिक ज्ञान ही नहीं, बल्कि मानवीय मूल्यों का विकास भी अत्यंत आवश्यक है। आनंद विभाग द्वारा संचालित गतिविधियाँ विद्यार्थियों और शिक्षकों दोनों के लिए प्रेरणादायी हैं।ज्ञात हो कि राज्य आनंद संस्थान मध्य प्रदेश भोपाल के अंतर्गत वर्तमान मे कार्यशालाएँ भी संचालित की जा रही हैं, जिनमें शासकीय हायर सेकेंडरी स्कूल, सीएम राइज विद्यालय, उत्कृष्ट विद्यालय एवं मॉडल स्कूलों के शिक्षकों को प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। आने वाले समय में विद्यालयों में भी नियमित रूप से आनंद गतिविधियों एवं आनंद पीरियड का संचालन किया जाएगा, हायर सेकेंडरी स्तर पर तो इसकी कक्षाएं लग रही है। अब महाविद्यालय स्तर पर भी वर्कशॉप की जा रही है।जिससे विद्यार्थियों में सकारात्मक सोच, नैतिकता एवं मानवीय गुणों का विकास हो सके। उक्त संचारिकाआनंद सहयोगी महेंद्र तोमर जी के सहयोग से सांदीपनि विद्यालय के प्राचार्य महोदय को सप्रेम भेंट की गई।

आँकड़े केवल संख्या नहीं, देश की धड़कन होते हैं

किसी भी देश की असली तस्वीर केवल ऊँची इमारतों, चमचमाती सड़कों और बड़े-बड़े भाषणों से नहीं बनती। असली तस्वीर तब दिखाई देती है, जब हम गाँव के अस्पताल की टूटी खाट देखते हैं, सरकारी दवाखाने के बाहर लगी लंबी कतार देखते हैं, या किसी गरीब पिता को अपने बच्चे के इलाज के लिए कर्ज लेते देखते हैं। आँकड़े कभी झूठ नहीं बोलते। वे चुप रहते हैं, लेकिन बहुत कुछ कह जाते हैं।

हाल ही में सरकार द्वारा जारी एक स्वास्थ्य सर्वेक्षण ने देश के सामने कुछ ऐसे सवाल रख दिए हैं, जिनसे मुँह मोड़ना आसान नहीं। रिपोर्ट कहती है कि चौदह वर्ष तक के लगभग एक-तिहाई बच्चों को साँस से जुड़ी बीमारियाँ हुईं। यह संख्या छोटी नहीं है। इसका मतलब है कि हर तीन बच्चों में से एक बच्चा किसी न किसी श्वास संबंधी परेशानी से जूझ रहा है। अब जरा सोचिए–क्या हमारे अस्पताल, स्वास्थ्य केंद्र और गाँवों के दवाखाने इस चुनौती से निपटने के लिए तैयार हैं? सच कहें तो स्थिति बहुत संतोषजनक नहीं दिखती।

भारत में स्वास्थ्य व्यवस्था हमेशा से एक बड़ी चुनौती रही है। शहरों में बड़े अस्पताल हैं, आधुनिक मशीनें हैं, विशेषज्ञ डॉक्टर हैं। लेकिन गाँवों और छोटे कस्बों की हालत अलग कहानी सुनाती है। कहीं डॉक्टर नहीं हैं, कहीं दवाइयाँ नहीं हैं, तो कहीं अस्पताल की इमारत तो है लेकिन इलाज की सुविधा नहीं। कई बार तो लोग अस्पताल पहुँचने से पहले ही उम्मीद छोड़ देते हैं।

यह रिपोर्ट एक और चौंकाने वाली बात बताती है। तमिलनाडु के निजी अस्पतालों में इलाज का खर्च सरकारी अस्पतालों की तुलना में लगभग साठ गुना अधिक पाया गया। यह अंतर इतना बड़ा है कि सुनकर ही हैरानी होती है। पड़ोसी राज्यों कर्नाटक और केरल में यह अंतर छह गुना से भी कम है। इसका अर्थ साफ है–स्वास्थ्य सेवा अब केवल सेवा नहीं रही, कई जगह वह महँगा व्यापार बनती जा रही है।

अब सवाल उठता है कि लोग इतने महँगे निजी अस्पतालों में क्यों जाते हैं? इसका जवाब भी कड़वा है। क्योंकि बहुत से लोगों को सरकारी अस्पतालों पर भरोसा नहीं रह गया है। उत्तर प्रदेश, बिहार और महाराष्ट्र जैसे बड़े राज्यों में ग्रामीण आबादी का सत्तर प्रतिशत से अधिक हिस्सा निजी अस्पतालों का सहारा ले रहा है। गरीब किसान, मजदूर और छोटे दुकानदार तक निजी अस्पतालों की ओर भाग रहे हैं, जबकि उन्हें पता है कि वहाँ खर्च बहुत अधिक होगा।

यह स्थिति केवल आर्थिक समस्या नहीं है, बल्कि सामाजिक चिंता भी है। जब कोई गरीब परिवार इलाज के लिए अपनी जमीन बेच देता है, गहने गिरवी रख देता है या कर्ज में डूब जाता है, तब बीमारी केवल शरीर की नहीं रहती, वह पूरे परिवार का संकट बन जाती है।

हमारे बुजुर्ग कहा करते थे–'स्वास्थ्य ही सबसे बड़ा धन है।' यह बात आज पहले से कहीं अधिक सच लगती है। लेकिन दुख की बात यह है कि स्वास्थ्य अब कई लोगों के लिए सबसे महँगी चीज़ बन गया है। शहरों के बड़े अस्पतालों में प्रवेश करते ही ऐसा लगता है जैसे इंसान नहीं, जेब का इलाज हो रहा हो। जाँच पर जाँच, फीस पर फीस। आम आदमी कई बार बीमारी से कम और बिल देखकर अधिक डर जाता है।

यहाँ एक और बात समझने की ज़रूरत है। आँकड़े केवल किताबों में छपने के लिए नहीं होते। उनका असली काम सरकार को सही दिशा दिखाना होता है। अगर किसी क्षेत्र में बच्चों में साँस की बीमारी बढ़ रही है, तो वहाँ साफ हवा, बेहतर पोषण और अच्छे स्वास्थ्य केंद्रों की ज़रूरत है। अगर ग्रामीण लोग सरकारी अस्पताल छोड़कर निजी अस्पतालों में जा रहे हैं, तो इसका मतलब है कि सरकारी व्यवस्था में कहीं न कहीं बड़ी कमी है।

दुर्भाग्य से हमारे यहाँ कई बार रिपोर्टें तो बनती हैं, लेकिन उन पर गंभीरता से काम कम होता है। आँकड़े फाइलों में बंद होकर रह जाते हैं। नेता भाषण देते हैं, अधिकारी बैठकें करते हैं, और कुछ समय बाद सब शांत हो जाता है। लेकिन बीमारी इंतजार नहीं करती। वह हर दिन बढ़ती है।

स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों और शिक्षकों के लिए यह विषय इसलिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह हमें समाज की वास्तविक स्थिति समझने का अवसर देता है। शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा में अंक लाना नहीं है। शिक्षा का अर्थ है–समाज को समझना, समस्याओं को पहचानना और समाधान के बारे में सोचना।

बच्चों को यह जानना चाहिए कि स्वास्थ्य केवल अस्पताल से जुड़ी चीज़ नहीं है। साफ पानी, स्वच्छ हवा, पौष्टिक भोजन, व्यायाम और साफ-सफाई–ये सब स्वास्थ्य के आधार हैं। अगर शहरों में प्रदूषण बढ़ेगा, गाँवों में गंदा पानी मिलेगा और बच्चे जंक फूड खाते रहेंगे, तो बीमारियाँ बढ़ेंगी ही।

शिक्षकों की भी बड़ी भूमिका है। वे बच्चों को केवल पाठ्यपुस्तक नहीं पढ़ाते, बल्कि जीवन की समझ देते हैं। अगर स्कूलों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़े, स्वच्छता की आदत डाली जाए और बच्चों को संतुलित भोजन का महत्व समझाया जाए, तो आने वाली पीढ़ी अधिक स्वस्थ बन सकती है।

भारत ने स्वास्थ्य के क्षेत्र में बहुत प्रगति भी की है। टीकाकरण अभियान, आयुष्मान जैसी योजनाएँ, नए अस्पताल और डिजिटल स्वास्थ्य सेवाएँ–ये सब सकारात्मक कदम हैं। लेकिन सच्चाई यह भी है कि देश बहुत बड़ा है और चुनौतियाँ भी विशाल हैं। केवल योजनाएँ घोषित कर देना काफी नहीं। ज़मीन पर उनका सही क्रियान्वयन होना चाहिए।

एक पुरानी कहावत है– 'जिस घर की नींव कमजोर हो, उसकी दीवारें ज्यादा दिन नहीं टिकतीं।' देश की स्वास्थ्य व्यवस्था भी वैसी ही है। अगर गाँवों के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र मजबूत नहीं होंगे, तो बड़े अस्पतालों पर बोझ बढ़ता जाएगा। अगर गरीब आदमी को पास में सस्ता और अच्छा इलाज नहीं मिलेगा, तो वह कर्ज और चिंता में डूबता रहेगा।

आज के समय में नीति बनाने वालों को आँकड़ों की भाषा समझनी होगी। केवल चुनावी नारों से देश स्वस्थ नहीं बनेगा। जहाँ बच्चों में बीमारी अधिक है, वहाँ डॉक्टर भेजने होंगे। जहाँ अस्पताल कम हैं, वहाँ नए केंद्र खोलने होंगे। जहाँ दवाइयाँ नहीं पहुँच रहीं, वहाँ व्यवस्था सुधारनी होगी।

यह भी सच है कि संसाधन सीमित होते हैं। सरकार हर जगह एक साथ सब कुछ नहीं कर सकती। इसलिए सही आँकड़े बहुत महत्वपूर्ण हो जाते हैं। वे बताते हैं कि सबसे अधिक जरूरत कहाँ है। जैसे डॉक्टर पहले बीमारी की जाँच करता है, वैसे ही सरकार को भी आँकड़ों के आधार पर निर्णय लेने चाहिए।

आखिर में सबसे बड़ा सवाल यही है–क्या हम आँकड़ों को केवल पढ़कर भूल जाएँगे, या उनसे कुछ सीखेंगे भी?

क्योंकि आँकड़े केवल संख्या नहीं होते।

वे उन बच्चों की खाँसी हैं, जो रात भर सो नहीं पाते।

वे उस किसान की चिंता हैं, जो इलाज के बिल से डरता है।

वे उस माँ की आँखों का डर हैं, जो अस्पताल के बाहर खड़ी रहती है।

और अगर सरकारें सचमुच इन आँकड़ों को समझ लें, तो शायद नीतियाँ भी जमीन से जुड़ेंगी, अस्पतालों में भरोसा लौटेगा और स्वास्थ्य केवल अमीरों का अधिकार नहीं, हर नागरिक का अधिकार बन सकेगा। देश की असली ताकत उसके स्वस्थ नागरिक होते हैं। बाकी सब चमक-दमक तो बस ऊपर की परत है।

आनंद मोहन मिश्र
विवेकानंद केंद्र विद्यालय
जयरामपुर
चांगलांग जनपद
अरुणाचल प्रदेश
दूरभाष - 9436870174